कोई बुरा प्रभाव नहीं होता है। वास्तव में फास्फोरस पूरक जैसे कुछ उर्वरकों के प्रयोग से कुछ अनुकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना है, जिस से पौदों की पोषणिक कमी हो दूर किया जा सकेगा और अन्ततः उनके प्रयोग द्वारा मनुष्यों और पशुओं शरीर में भी इस कमी को पूरा किया जा सकेगा।

जहां तक दवाइयों का सम्बन्ध है (अनुमान है कि इस स्थान पर दवाईयो का तात्पर्य फफूंदनाशी, कीटनाशी, खरपतवार नाशी और बढ़ौत्तरी-नियामकों से है) केवल फफूंदनाशी, कीटनाशी, खरपतवार नामी और बढ़ौत्तरी-नियामकों जैसी दवाईयो की वनस्पति-रक्षा में उपयोग करने के लिए सिफारिश की जाती है, जिनका कि निर्धारित मात्रा और सिफारिश की गई विधियों से देने में मनुष्यों और पशुओं के स्वास्थ्य पर हानिकारक असर नहीं होता है।

कोटा सिटी आउट एजेंसी का बन्द होना

१२३१. **श्री बंरवा :** क्या रेलवे मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या कोटा सिटी रेलवे आउट एजन्सी बन्द कर दी गई है; और

(ख) यदि हां, तो क्यों ?

रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री मॅ० वॅ० रामस्वामी): (क) और (ख). ठेकेदार ने गंभीर अनियमितताएं की थीं इसलिए १-७-६२ से आउट एजेन्सी अस्थायी तौर पर बन्द कर दी गयी।

मेकांग अनुसन्धान परियोजना

१२३२. **श्री बंरवा :** क्या सिंचाई और विद्युत् मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि टोनले सेरा और मेकांग अनुसंधान परियोजना के क्षेत्रों का निरीक्षण करने के लिये कमीशन के दो अफसर मई, १९६१ में बैंकाक भेजे गये थे ; और

(ख) यदि हां, तो जन, १९६२ तक प्रस्तुत उनकी रिपोर्ट का क्या ब्यौरा है?

सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अलगेशन): (क) जी, हां।

(ख) अपेक्षित जानकारी का विवरण सभा के पटल पर रखा जाता है।

विवरण

केन्द्रीय जल तथा विद्युत् आयोग के अधिकारियों द्वारा अब तक दी गई रिपोर्टों का ब्यौरा संक्षेप रूप में नीचे दिया जाता है :--

१. टोनले सैप बैरोज एक बहुत लाभप्रद परियोजना सिद्ध होगी, जो कि और चीजों के साथ साथ, मच्छलियों की पैदावार को बढ़ाएगी, शुष्क ऋतु में पानी के स्तर को थोड़ा बढ़ा कर बड़ी झील के सदा रहने को निश्चित सा कर देगी और निम्न डल्टा में बाढ़ शिखर में से १ से १॥ मीटर कम करने में सहायता देगी।

२. बैरॉज के लिए दो वैकल्पिक स्थल हैं। स्थल का अन्तिम चुनाव विस्तृत क्षत्रीय अनुसन्धान, जो कि अब किया जा रहा है के बाद करना होगा।

प्रस्तावित स्थलों में से एक में उपस्तर को मोटे रूप से जानने के लिए अभी तक जांच के तीन निम्नलिखित तरीके उपयोग में लाये गये हैं :—

(१) वक्रीकरण भूकम्प विज्ञान द्वारा भू-भौतिकीय अध्ययन (Geophysical studies through refraction seismology)

(२) नग्न परीक्षण गर्त (Open trail pits) (आठ)

(३) वाश-बोरिंग (दस)

३. जहां तक मच्छलियों पर अध्ययन का सम्बन्ध है, भारतीय दल बड़ी झील के सुधार के लिए पग उठाने के सम्बन्ध में

एक विस्तृत नोट तैयार कर रहा है। इस में मत्स्यग्रहण, झील को बनाए रखने की आवश्यकता तथा कुछ और तत्सम्बन्धी विषय भी सम्मिलित होंगे ।

४. उपयुक्त निर्माण सामग्री को चुनने के लिए तथा उनका इंजीनियरी गुण जानने के वास्ते परीक्षण करने के लिए, कम्बोदिया में एक मिट्टी तथा कंक्रीट की प्रयोगशाला स्थापित करने का विचार है। भारत में मिलने वाले लगभग सारे सामान के लिए आर्डर दे दिये गये हैं ।

५. कम्बोदिया और वीतनम के कुछ इंजीनियरों के लिये भारत में प्रशिक्षण सुविधाएं दी जा रही हैं ।

भूचालीय इंजीनियरी

१२३३. **श्री बैरवा : क्या सिंचाई और विद्युत** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि भूचालीय क्षत्रों में बांधों के निर्माण के काम की भूचालीय इंजीनियरी में हुई नवीन खोजों का अध्ययन करने के लिये केन्द्रीय जल तथा विद्युत् आयोग के जल संभाग के जो सदस्य खास तौर पर जापान भेजे गये थे उनकी भूचालीय स्थल में बांधों के निर्माण के बारे में रिपोर्ट का क्या व्यौरा है ?

सिंचाई और विद्युत् मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अलगेशन) : महत्वपूर्ण ब्योरा सुझाव। निम्नलिखित हैं :—

(१) स्पन्दन सम्बन्धी तथा गत्यात्मक समस्याओं से और विशषेतया भूचालीय इंजीनियरी से सम्बद्ध अनुसन्धान निम्नलिखित प्रयोगशालाओं में करने पड़ते हैं :—

(अ) विधि विश्वविद्यालयों की प्रयोगशालाओं में ।

(ब) इंजीनियरी महा विद्यालयों की प्रयोगशालाओं में ।

(स) सिंचाई तथा विद्युत् की, डिफन्स, रेलवे और भवन अनुसंधान, आदि की प्रयोगशालाओं में ।

(२) नदी घाटी परियोजनाओं के क्षेत्र में, संरचनाओं के व्यवहार के निरीक्षण को रिकार्ड करने के लिए संरचनाओं में यंत्रों के अवस्थापन को सुनिश्चित करने के लिए विशेष उपाय किये जायें ।

(३) नेशनल फिजिकल लेबारेटरी से सलाह कर, निरीक्षणों के लिए आवश्यक 'स्ट्रेन गाजिज़' तथा सम्बद्ध यंत्रों को बनाने के लिए पग उठाने चाहिएं ।

(४) विशिष्ट क्षत्रों में काम करने वाले इंजीनियरों की टीमें जापान जैसे देशों में भेजी जानी चाहिएं, ताकि वे भूचालीय इंजीनियरों के क्षेत्र में की गई प्रगति से अपना सम्बन्ध स्थापित रखें ।

(५) गत्यात्मक प्रतिरूपों की सहायता से केन्द्रीय जल तथा विद्युत् गवेषणा केन्द्र, पूना में अध्ययन शरू करना चाहिए ।

टिड्डी संकट

१२३४. **श्री बैरवा : क्या खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारत सरकार ने टिड्डी दल को रोकने के लिये कितना रुपया तीनों योजनाओं में अब तक खर्च किया है;

(ख) देश में किन स्थानों पर टिड्डी संकट को रोकने में सफलता मिली है;

(ग) क्या दिनांक ७ जुलाई, १९६२ को मथुरा से कोसीकलां स्टेशन तक बड़ी तादाद में टिड्डी दल बैठा हुआ था; और

(घ) यदि हां, तो उसको रोकने के लिए हमारे विशेषज्ञों ने क्या प्रयत्न किया ?